

DPN 5707

Title : इन्द्रजाल ~~INDRA~~ INDRA JĀLA

Run. No. 6398

Cat. No.

Micro. No.

Subject Mantra / Mantrā

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Hindi ✓

Size in cms. 23 × 13

Folios 44

Lines (in a page) 8/10

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhu. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

0 CM

5

10

15

20

25

20

15

10

5

0

centimeter

5

10

15

20

25



१ वा. प्र. म.
म. नं.

३ दुलत

मत्रधन

विष्णु २
३५ ३३

३५७

निका. दुध पिपा हल्ला नसे हल मकरा ओगे वदि वार बेग हल
 बै बै जे तो मतो अंजनि का दुध पिपा हल्ला न कहं जे ध
 हि पान का बिधा तुझा दि भेत है जो वा चा चु कै तो कुं भये हि
 सुबे मेरे हंकारे नहि हंकारे जो माला अंजनि कि दुहाई
 नरसिंह पिता कि दुहाई आदि पुष्ट कि दुहाई सति सिता
 कि डे धुं हनु संता विरते रि सति मेरि भक्ति फुरे मंत्र
 ईश्वर वाचा ॥ फेरा ॥ ॥ इस मंत्र से वाक् को हार देने से भ
 प प्रेत मसान सव भागें ग्य हार मोद कि पंचा से देना चाहिये
 १० ओं नमो नोह का लो धा जाहा संकि कृदि ह मरा पिठ

वधा ईश्वर कुं वि प्रह्लाता ला ह मारा पि का वा श्री हनुमं
 न विर. र मला ॥ २० ॥ इस मंत्र को पधक को हि है कहि जावे
 सरि मे. कि सि प्र का कि चि न्न न हो गि ॥ इ मति च ल २
 १ स्याहा ॥ ११ ॥ इस मंत्र ॥ लाल लाल ३ गां धा दे क्र इसि म मंत्र पध
 २ पाद के अंगु था से बांधा ॥ पछत कुं पर पछत ओर प
 छत कुं पर फुतिक सिता फुतिक सिता प्र अंजनि जित जा
 पा हनुमं तू ते हला ते हला काय की क छत ई पिछे कि अंदि
 तथ को न कि कनक दु गान कि वद कं धा कि कं ध माला
 छत ने का दु ह ह हार की इत लल पे की ता पति सि पिपा ह तने

भाषा वृत्ति जाल
 १०
 २०
 ३०
 ४०
 ५०
 ६०
 ७०
 ८०
 ९०
 १००

25
 20
 15
 10
 5

माया वन्दि जात

को दूर करै भस्मंत नातर तुम्हें माता अंजनिका दुध पिना
 हास मोर भाकि गुरुकि साकि फुले मंत्र ईरवा चा. लख ना
 मा आदे स गुरुका ॥ १२ ॥ इस मंत्र सात लख बार हनु मानजिका
 पुजन धु पदिप नै व्यधादि ले करै १०८ मंत्र जपै स्त्री को पास नहि जाय
 कीर होति दिवाति तथा मर्त्य नमै १०८ मंत्र जपै कसो तरि. अदिध क
 न फेद बर. कंच माता दुह लुको लखसे झाड़ै दुरुको आकले तापति
 लीको लुरिसे झोरै हनु मान का पसीद बर बाय दिया करै
 १ ॐ हुं डारि नि प्रसव कुं सित लम् ॥ ५१ ॥ इस मंत्र का पध क्र गा
 य भैंस वधरि को घास बवावै तो बहुत दुध देना

१ ॐ हुं डारि नि प्रसव कुं सित लम् ॥ ५१ ॥

१ ॐ हुं डारि नि प्रसव कुं सित लम् ॥ ५१ ॥

१ ॐ हुं डारि नि प्रसव कुं सित लम् ॥ ५१ ॥

१ ॐ हुं डारि नि प्रसव कुं सित लम् ॥ ५१ ॥

१ ॐ नमो नगर नाथा प्रः हर हरः सिली सिली सर्वे मां प्राणिनां तु
 न दुबंध र्णा कुरु कुरु कुं कुं फल स्यात् ॥ ५० ॥ इस मंत्र सकेत
 सरस्युं मे कतु मिला कर. सात बार फुके फिर उन को घात मे
 दात देवै सर्व पकी रको डव न रहो जाय जा

१ मोंडों ॥ फेरा ५४ ॥ विना भोजन के यही इस मंत्र का ५००

जाय क्र तो असा धरा ज पुत्र मित्र वा ठव संपुर्न वस हो जाय

४ बर ही पुर्न मंत्र मे उतम मंत्र है ॥

४ ॐ नै मोः कत वी

कत धोरत नि स्यात् ॥ ५५ ॥ भात का पिदा वना क्रु इस

मंत्रको सौते बार पध कर जिसके नामसे सात दिन तक स्वाय सो अवश्य
बल होय

- १ ॐ वश्यमुष्टि राजमुष्टि स्वाहा ॥ ५६ ॥ इस मंत्र सात बार प
ध कर मुख धोवे फिर जिसका देखे स्वर्ग बस होय
- २ ॐ राजमुष्टि वस्यमुष्टि स्वाहा ॥ ५७ ॥ बाटा हाथ मे लपट
ल कर निन बार मंत्र पध कर के फिर प्रात कात हि लपटा
पर बैठ कर निन बार मंत्र मंत्र का पाठ कर के म्रम और केस
पर हाग दें लो जिसको दें वै बहि बहा होय और व्याघन भि
३ इसको नहि छाये गा ॥ ॥ ॐ चो मुंदे जय जय ल
भय लभय मोहय मोहय सर्व लक्षण मः स्वाहा ॥ ५८ ॥

पुनः पाठ कर पुनः पसे कर पुनः पाठ कर

- ४ इस मंत्र को पध कर जिसको छुट हो बहि बस होय गा
ॐ य ह्रीं श्रीं धन करु करु स्वाहा ॥ निपल दस प्र चणक यका
- ५ प्र मन ले इस मंत्र का ऐ अमुत १०००० जप करे लो धन दाय दिनि हि दाय
होय जाहे जितना धन माग लो ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं पुत्र करु करु स्वा
हा ॥ इस मंत्र को आपको धरे प्र चध कर प्रका प्र मन ले यक करो द जयै
पुत्र दाय दिनि लिहो जायें गि और निस्वये पुत्र दें गि ॥ ६ माहात्म्ये यदि नि मंत्र
- ६ ॐ ३ म ह्रीं ह्रीं महा लक्ष्म्ये नमः ॥ विटि बतके नुद्रे चध कर दक
मम से एक करोद जप करे माहात्म्ये नमः यदि नि होदि होक अचर
गदिम दे गि ॥ ॐ नमो माहात्म्य महा परा कर्म सासु वि
द्या विद्या लक्ष्म्ये रद अमु कल्प भुज वृक्ष वन्द्य वन्द्य पद वि

यदि नि मंत्र पुनः पाठ कर पुनः पसे कर पुनः पाठ कर

साम्प्र-६ लक्षण अङ्गुलि धुनय धुनय वातय पातय महितय
१ ॥ ओं शकारसंनिकालक एतस्यै अभि संवत्त कर्क साङ्गपर
त्यप कर्क संवत्त मेत्य जायतो बो लु देवते हि मोहित होये ॥

१ ओं जयं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॥ इस संवत्त को यकात्र चित्ते आ क कि जदु पर
२ बैठ कर जयेतो यदि नि लिटि होय सो संवत्त का जमे जये करे इत्या जत १ न देहे
ओं ऐं ह्रीं नम ॥ ॥ आ व यदे जदु पर बैठ कर ई सत्र को जये १०००००

यदि नि लिटि होय क लव अङ्गुलि को दुर जाये ॥
३ ॐ ह्रीं ह्रीं नम ॥ ॥ इस सत्र को १००००० तुलानि कि जदु प्र बैठ कर जये १ ॥ तज्य
४ का पक्षित सुतो अन्नास मात राज्या मिले ॥ ॐ ह्रीं नम ॥ ॥ अंकोर कि क मत्र

जदु पर बैठ कर ध्यान पूर्व कय क लवे जय नेके शला घिरा जहो जात है ब्रह्मा का कर्म मत्र

५ क्षात लंघका उपदेत है ॥ ॐ वाडु माया ये नमः ॥ ॥ कुसकि जदु
पर बैठ कर यक लदेय नेसे ५ पुरी का य सिटु होय है ॥

६ ॐ ह्रीं भारते ई नम ॥ ॥ संकरोरु इस संवत्त को ओं शा कि जदु पर ६ वाचा सिटु
बैठ कर जय नेसे मनुष्य कि बो नि लिटु हो जाते है जो कही संग्र हो
जाय जय ॥ १००००० ॥ ॐ ह्रीं नीलार्थ ये नम ॥ ॥ गुल के बदे ७ विद्या

प्र बैठ कर इस संवत्त को जय नेसे मनुष्य १४ विद्या विदुषा हो जाते है ज मंत्र
७ ॐ १०००० ॥ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ॥ निर्गु नि कि जदु प्र बैठ १ लक्षित

क इस संवत्त को जय नेसे विद्या धान हो जाता है जय एकताय ॥ मंत्र

८ ॐ जगन्मात्रे नमः ॥ ॥ लफेत विमि टि बैठ कर जय नेसे मतो ४ ६ वादि
नामो गद्दि नि सिध दो क वा दित फटा दे ति है ॥ ॥ कर्म
यक वादि
कि मत्र

१ ओं ही आग ऊर सरल-दरि स्वाहा ॥ एकलिंगमाहादेवको शिकप
पुजा करे धुपदिपदेक तिनसहसर मंत्रका जाप करे हरि शिखे से. एक
महिने विदे सरल-दरि आवंशि. तब ठ ससे देवि दादि दे इग दो उलिस
मो तास करिये भव ॥ यसै कहक पनास करे अर्ध देय तब वर प्र
सन्न होक अमित वित्त और दिर्घ छु दे जायंगी

२ सहस्र
का प्रयोग

२ ओं अनु रागिनि मे थ न प्रि प्र स्वाहा ॥ किसिम होने के
पति प्रसा से इस मंत्र को भोजा पर घर के सर से लिये और तिन
कार मे तिन तिरा सहसर लिखा जाय कनो यदि नि प्रसन्न होक
यक माह ने विदे आधे रात का समय एक सहस्र दिवार प्रति दिन देजा
करे शि यर सरोत है इसे लो नति

३ ओं किं च हि कै हं स ओं कि स्वाहा ॥ पदका से आंर भ कर्क लु
कल पद मे इस मंत्र को इस समय एक जाप करे जनु क चंदमा
दिखे पला करने से अमृत नाम यदि नि लिख होक अमृत देजा
यंगी। कानि स्को धिकर क शि मिलु क पास हि न आवे

३ अमृत
पिनि काम

४ ओं ३ म दी चन उ वे गि नि व दे स्वाहा ॥ इस मंत्र को एक भु
त १-००० जापे तो कर्त विना चि नि लिख होक विहो कि दि वार्ता
कान्मे कह जाय करे शि ॥ ॥ ॐ नमो भगवत्य रुद्रा
य क शा पि सा चा प स्वाहा ॥ रुद्रिका का फल तथा लफो
का किला होत ने वी धं रु सिर प्रवाधे और इस मंत्र को एक

४ कर्त वि
ना चि नि

५ कर्त वि
ना चि नि

माया वृद्धि जाल

अपुन ज वेतो रात्री के समय करी पिला चिनि तिन लोक का ल

१ भल भ कह जायेगि ॥ ॥ ओं वं मं हं सि हं या ने ही ती स्वा ^{हीस}

हा ॥ ॥ हिसं मंत्र लुके वाहर के कोने प्र जाक एक लक्ष जपे और ठ

में सावधान क्रम के पशो का लवन कृतो हंसिनी ऐसा अजन दे

गि जिल्लो आस मे लागे ले पृथिवी का गठा हुआ धन दिख ने

२ लगा ॥ ॐ नमो ^{२ गम} ओ दे ल गुरु की जै जै जै जै जै कारः ^{बमवा}

गोर्ष वैद्या घोह धार जव लग गोर्ष जाप जपे जव लग राजा

विनिष्ठ न करे गुरु का त्या जातना ईश्वर बांधा गंडा राख

राखः श्री हनमंत बजरंगिनि दित का पर्ता औं डा दुध पुत

ईश्वर की मायाः पदता गर्भ श्री गोर्ष नाथ नि रक्षा वा मेरिभ

कि गुरु की सक्ति पुरो मंत्र ईश्वर वाच ॥ कारिके वासे सुत क

ताय के हिस वाद मंत्र पठ कर गर्भ धारिके कम से कांठ

देवै गर्भ गिती रुक जाय ॥

३ ओं कृत चाहा ॥ धुप गुगल सेवें ^आ बनसो ताकेः कारि नि दुर दो ^{३ सतिन}

क्रीं हीं ओं हीं हीं ॥ हिसं मंत्र ^{४ व्याघ्रन} पकलो दे के तुक दे को आध वाद ^{४ व्याघ्रन}

पध करः निरु कि ओर फेंक देतौ व्याघ्र का मुख बंद होजा

पगा और उंल्ले चतने कि सामर्थ न रहे ॥

४ ओं हीं रभ चा मुं दे तुल्लुत अमुक मे वल मान प स्वा हा ॥ ॥ ^{५ लुहस}

25

20

15

10

5

हनुमान

चौं हारि। कि जे को चादिके तावि जे मे मठ क मुख मे धारि करै और
 हिस मंत्र को पठत रहै तो सुरु का मुख वर हौ जायगा उग्र
 देने का सामर्थ न रहे ॥

औं अहो कुम्भकर्षा महारादे ^{१ सुरुवा}
 मे: निकषागर्भ सभुन प्र से न लम्भन भगवन् रुद्र आ ^{२ शिख}
 न पयति स्यात् ॥ कलाकि कुं स्तक और नेत्र मे ताल कि ज
 रं मुख मे सजु कुं हाथ आर चरार् मे बांठ देवे तो सपुग इन्द्र
 का न चले हिस मंत्र का वाठ कर्ता रहे ॥

२ औं नमो भगवते विद्या मित्राय नमः सर्व सुखि ^{विद्या} ^{३ धर्म} ^{४ सुरु}
 यः विद्या मित्र उपाय पयति सकला आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥

नदि मे प्रवृत्त कर्के हिस मंत्र को जपे और जल्पा तर्पन करै तो सुरु कि
 बुटि का लम्भन होय ॥ औं ब्रह्म वे सिलि सिवे रश्मि रश्मि ^{५ चौकि गति}
 ठठ ॥ हिस मंत्र को बध क लात पा सो को हाथ मे लेक तिन की मर मे

बाधे और दो दो दोनो मुठियो मे लेवे तो चौकि गति रुक जाय
 औं अं ओं ई ई उं ऊं कं क कत ॥ हिस मंत्र से धतुरे के ज ^{६ सर्व जन}
 पितक तिलक लगावे जो देखे स्व बस हो ॥ ^{७ किर पान मे कक} ^{८ मोहन}

औं भिं शौं भिं मोहय मोहय ॥ हिस मंत्र को तिन गार पठने ^{९ मोहन}
 से मनुष्य मोहित हो जाता है

मायाशुद्धी जाल

ॐ स-म-ध मन्मथ वाहिनि लम्बोदर मुच मुच स्याहा ॥
 लज्जानादिले पावि ब्रह्मे क्रूर सन्त्र क्रूर के गर्भ किया ऊ आ जल ग
 न वाते स्त्री को धिने ले लेय देवे वा लसुम पुर्क और सिप्र होवे
 ॐ इतं मुच मुच उदाम रेस्यर आना पयं ति स्याहा ॥

वैधनाय चन्द्र न लेधा न्मक कव वचतेत धि चवि ईन्की धुनिवना क्र ई
 सन्त्र से तिनवार मंत्रित कर्क देवे वा लक को भुत दिप वा धा होय न कि
 ॐ नमो क मत्र पि डू ले रुड दृ द या डू वेनाला स्थि धानि तिष्ठ
 तिष्ठ सर सर सर्वा नु मोहये मोहय भगवति सिवाजे निसि

१ भुत नवी
 रन मन्त्र

र महा माये स्याहा ॥ भार्गविकि पुर्न मासिको दिरिब मुलः हा
 वे और हिस मन्त्र को १०८ पठ क्र पूर्वोक्त ल्द को चौदिमे बांधि
 तौ न धत्से छुते ॥ दंजुं ॐ आयः आय चिं चिठि चिठि हां
 लौ पुन नान्दे को कालिका ॥ हिस मन्त्र से पठ क्र लके र सर से
 कि बा दो प्र मा रै तै तत्कालः व दी गृ ह छुत जाय ॥

ॐ हुङ्गु रिनि प्रसव ॐ नितल म् ॥ हिस मन्त्र को पठ
 क्र गार्ह मैसि को धाल बाय तो दुध वधा ना दे गि
 ॐ नमो भगवते रुद्राये रुद्र दक्षा कतलाय अम्र कं स पुत्र वीध वी ॥ उचातन
 लः लः लः लः दतः दतः पचः पचः लिधं उचातय उचा य रुं कत स्याहा
 रु

गार्ह मैसि
 का दुद वधा ना

५ उचातन

25

20

15

10

5

१ वेति दुष्टा २ अमरके भाग माया क. दि. जाल ३ धनुर्विद्या

१ ॐ लोहित मुनि स्वाहा ॥ पुनर्बल नद्ये कादिने चित्त काठ कि
लकदि ८ सं गुरु वना क मंत्र जपने से सेत प्र फे करे छति नास हो
२ ॐ दमन्य दमन्य स्वाहा ॥ हरिताल के जावे विजयोर सुख हागा
इनको पिसक हिस मंत्र को वध कर कु भाव अवासे दात देवे व
३ तता फुल जायगा ॥ कला युत रत्ना धरे ओं कारस

गुरु मधारे एका रस दात सहस्र हनु भाग्या ॥ सहस्र
विसत्या भरा विज्ञा है जो भर्जने से हनुने कहि ठि हिस मंत्र से ८
नुषा १ वान धुक् फे को १ के हजार हो जायगे वर। कु कलि

४ एक जो न ५ भागि होने के पाच वाक्य का मंत्र ६ मेघवला को मंत्र

४ जू के प नीले १ के १० होते है ॥ चान्द धर गुण रस कान्द
वृजा ज्ञान ३ ओं ३ ओं ३ ओं ॥ यह मंत्र महादेव से हनुने कहा था
हिस मंत्र धुक् वान मारने से एक को पाच हो जायदा गा
५ ओं ॥ ॐ ह य सि र्वा शि स्वा रा य न म ॥ भुज्य अथवा चन्द्र
गहन से हिस मंत्र से जो भिमत्री त कर्के वच पावे दुष्का युती कर्के
धिमें मिला क माध दिन स्थक प्राये तो मनु से धुल्यो के
स्मान हो जाय सहस्र जपने से यह मंत्र सिद्ध होता है
६ ॐ श्रीं ॥ हिस मंत्र जल धुल्यो जपे तो मेघवला हो

१ धर कावा

२ वतिवाले

आयाव निजात

३ बैर पाला

४ निंदित धन

- १ औं जित विद्यते स्वाहा ॥ समंत्र अग्नि जावे ॥ औं नमो भगव
त वासुदेवाय ववन्धः श्रीपतय स्वाहा ॥ समंत्र सेवति वति वनावे
२ औं नमो भगवति ॥ समंत्र काटिके ३ अर्कः विठे मय २ हुन २ पच २
मथ २ हुं फल स्वाहा ॥ समंत्र ले निमके पतोको कदूवे तेहमें मि
लाकत वन करे कुदमे धेड़ कि ल्कदि गलक समान की नमो आ
गमें जलावे आहुति में तिल जो और चावल मि मिलावे सि
तर्फ लसह स आहुति दें वे पर इ काल बीजे हतो ये
३ औं नमो भगवते ॥ इहु मरे स्वाय करु से सराय मय ने मड्डो

चने ठठः ॥ काले लाप के एक में निलि म करवी ओर क पो लोका वि
का मिला कर लेप करो से शत्रु तथे न पा गला हो जाता है तथा
तिले तल में बटा और अति कला फल कर लेप करने से फिर त
का लस पु हो जाता है ॥ औं नमो अग्नि ह वा य ही नमः
पुष्प नद्वे वने समंत्र से लफेत आ क किः जूला कर दाहिने हा
थ में बांध ले वनिंदका भयन होता

	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ
उ	अ	इ	उ	अ	इ	उ	अ	उ

सुतरविधि और सुभल गज मे
 सज्ज को गली चन्दः कल रिकपु
 रः कलपुरि चमे हिकेकलसे
 कासिकि थाल प्र लिय और
 फिर अल्पकाम ती पूर्वकः काम
 लयिकुल मातालि केतलि
 चमेते सुख का पुकृतः हिले पु
 धाले पुजन करे नैतु के फल

वधवैः कपुरः तां पुलः धुपदिम और लफेट चले वने पुजन करे
 परंतु लुचुड हित और लुचुड गकिः को इवल चधवैः हिलि
 तहिले नौक धादिः तिन दिन तक पुजा कना दुगां के पाथ कनी चा
 हियेः धा फना कोः विर भोजनः तिन दिन तक मदे साकरा
 वैः सोये तिन दिन तकः पृथिवी सोवै फिरः चड था दिनः इस जंत्र नि
 कात कः सो जंत्र मे पध बाकः भुजा मे वाः अथवा गले मे धार्न क
 रैः इस जंत्र को धार्न क तो ले उपरिः बाधा दुर्गे जाति है तथा विमे
 मक केः अतः इस कतरु और सनु भाग्यताः यल वै जाते रहते है

अन्यलोका धा पुरुषाया च हतेहै इन्की सवज्यते रहतेहै सवक
विबुधा होजातेहै ॥ इस जंत्र का नाम सांति का भी की कहें
यह देवताओं को भिदुर्लभ है

॥ ४८ ॥ आकषजंत्र

सः सः सः सः सः ६०
सः सः सौं हीं कौं
सा ध्या नाम
हीं कौं हीं कौं
हीं कौं हीं ६१

इस जंत्र को गोल चंद के मारि चन से भोजा पत्र त्रिषु क धुं
पदि प फल माता नै धातुः आदि से वि धि वत पुजा क के
उप से पिता स्तुत नै पेत देवै मनुष्ये स्त्री र प्र उ वत नै किः मूर्ति
वना क उल्ले ही र य मे इस जंत्र र छ देवै औरः उ वत नै दिले
धक क तित दिन तकः सये कात से सुखे से कि अंग
नि ह तपावैः तपाते सयेः इस जंत्र उचातन कता है ॥
हुं देव दत्त वेगन आकषयेः आकषये म नि भ दत्त

इसो रित से कर्ने परः देसांत्र में गया हुआ मनुष्य जो कहै जित निः दुर के
केः उन हो तत्काल भिदुर्लभ हो चला आता है ॥

॥ ४९ ॥ मित्र दसन

सा ध्या नाम

इस जंत्र का चननः आपात रित दोनो मिला क भोज पत्र पर लिख
गंध य म्पुले पुजान करै धूप दिप नै वै धः अक्षत पुद्गे मात च धावैः फिर
इस जंत्र को धूत मे दाल देवै नौः तिन दि न्के मित्र आक्रम मिलै यह जंत्र
त्र अतेत गोपाने ये हैः इस कि सिद्धो त देवै नः कि सि ले रित्ता रित को

॥ ५० ॥ यकांत राम वन जंत्र

१२	११	२	९
६	३	८६	८५
१८	१३	८	१
४	१	१४	१७

इस जंत्र को ठिकी पति ॥ ५१ ॥ मान दुर करने जंत्र
मै भुजा मे बाधती य
का र रित ता र है
जा

३३४	३३५	३३६
३३७	३३८	३३९
३४०	३४१	३४२

भोज पत्र पर लिख क
गले मे बाधो तो मं
मान दुर जा तो

[illegible]

॥५३॥ चर्व रक्ष्यालत्र

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ए	ऐ
ऌ	ॡ	ऋ	ॠ
ओ	औ	अं	अः

इस जन्म कल करि चैं न कपूर भोजा वन प्रै लिये धूप दिप चैं न
देता माला फूल नैं नैद से प्रजा न करः फिर धन वस्तु भादिले वा
न न का जेजा करः ताँ विये जन्म मेः साहिना भुजा मे और
स्त्री के ग मे वा द्योतो लिजन्त धार्मा करने लेः मत प्रसंता
रुता है भोगे वरता है लंपुड भये दुर्गो जाता है और
सले प्र सिद्ध होति है ॥

॥ ५४ ॥ वाग्वनक्ष्याजत्र

साधनाम

हिलजं भोजयत्र प्रलिख विठ वत पुजा करै त्रिलोहि मे
हिलोमधौ वाकः गतमेवाध कृ लारि लरिक ओद
मातलिकः सं पुनरोग दूरे आते है ई ध्य को प
प दूरे जात्य है कल नि। नै धु नि कल आ हो है तया

वातक को दुद का रंग दोष भिन्न भिन्न कहि सोने जाता है

॥५५॥ वात के रास जंत्र

ली	ली	ली	ली
ली	ली	ली	ली
ली	ली	ली	ली
ली	ली	ली	ली

जब किनि मनुष्य को भुत प्रोत बिसाच: सांकि बहुरा
भोसि: किलि स्त्री वा पुलख वातक गर्ह सते वै तव हुन
जंत्र को करे: ॥ इस जंत्र को धन न विन। धिपदे प्रत्यदि या
ने होवै भोर: फुट फुट उप: इहा स: पुजान कर के धुलाये
धक देवै और आगि के उप: उच्छेका रमक: धोर के कोले

फुटतै: वरु धदा भुत रोता रुवा: और कापदा रुवा: तत्कात भाग जाता
है और वात को तत देन दोर जाता है

॥५६॥ नज्ज २० का जंत्र

४	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

इस जंत्र को भोज पत्र प्र चंदन से लिख कर धूप देकर तावे के
ताबिले मधवा क उलवा लो वा धा देवै जिसके नज्ज
गला गरुडोय तौ नज्ज तत्का दुर्हो जाता है

॥५७॥ नित्य चर जाने जंत्र

८२	८२	२	९
६	८	८६	८५
८८	८२	८	९
९	५	८९	८९

इस जंत्र ठिक दिप्र लिख कर: उस मनुष्य को हात ले कर घुमे
और वावै: जिसके २ जोर जाता है तौ: उसका नित्य चर जाता है
इस जंत्र को भोज पत्र प्र लिख कर: मोते
समये: लिख संन्य धा देवै तौ ७ रा सं
पन दि सै होता है

॥५८॥ मोपना डेवे जंत्र

रं	सं	बं	कं
वं	दं	धं	जं
मं	पं	मं	दं
बं	जं	जं	दं

॥५८॥ धितिकुंवा

२१	२६	२२
२६	२४	२८
२३	२५	२९

ततो यसा धा हागा

॥५८॥ धतिनामजंत्र

२१	२२	२५
२०	२४	२८
२५	२६	२९

नामूनफात तो तातै

इति जिजाल सुभम समापत इति सम्यर १८ ई१ भात भाद्र १५
गल्प रोच पतिनकादिन मंगलवार आसा मानक सरो ले ल्यधिचे
सुधोवा अस धोवा मम दो मोन दि यते

याहातै धितल न्यपति
त्यधि य

भुभावि



धोजंत्रयानामभुत्सा सर्वल
भुजाजंत्रभुत् राजाधर्मालो
क सर्व मोह सर्वगर्भानु
धोजंत्रतत्त्वमभयना
स पापभुत्ताः कोलं
योस्यतया वर्ज किंको
र मंत्रनं जंत्रम घेरा
विधेः धत्य पापभुत्ता
अं ग राजः जंग राज मे
अन घेरा उपकेन भुपा
जक पापभुत्ता जंत्र

सद्योत्पत्तया मंत्रः पुनरुच्योयजेत्र भागः ॥ ॐ नमः केसरी कस
 दृष्टिः श्री वंद्योते भागः चोयजाय मंत्र १०८ जाय जाय धु
 नकावः आये व मास धुप १ गगन १ सिद्ध १ तयाव जंत्र द्या
 स कान चि य मंत्र १ सास धुप व गगन व धुपत जाय मंत्र द्या
 १ पुषाव जागे पाना व पाके जलः पुजा विधि भोग १ पुजा
 जोर १ सुचि पाना व पुषा जाय मंत्र द्यात थो

ॐ नमः तिल कालि किङ्कत स्वाहा ॥ ॐ पंचरक्षः साहा लदे
 वर्ज रक्षः भयल भेजं फत स्वाहा ॥ ॐ भुतं देवि प्रातं देवि

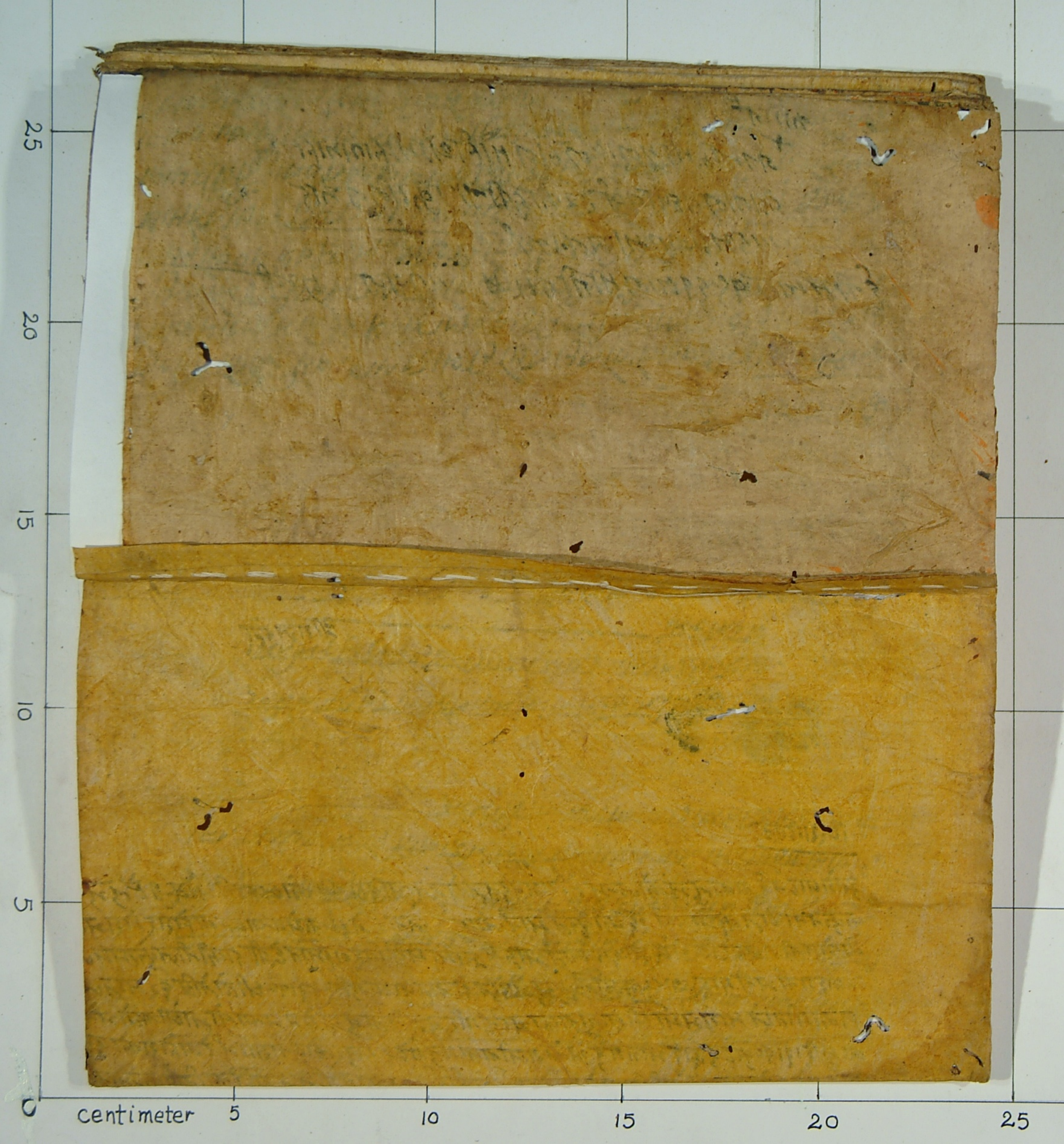
प्रसाचं देविः सांकिः सांकि केसरी हुं फत स्वाहा ॥ थोत्प
 मंत्र नं जाये पायं जिव ॥ ॐ नमः गुरु आग्याः सह सर नाम
 जंग राजः जंग राजः वसुध राक्षि देवि हुं फत स्वाहा ॥ वसे मंत्र
 ॐ नमः आ दे सगुरुः वर्ज किं कोः तो रो हो किं ता रा ता हा लि य
 हा मा राः अन रो रा धुं गो र्भः भद्र पा लः रा र्हा रा धुं भ अति वेता
 पा भे रा धनुः नसी दे वि रः वा र्हा रा धुं दे भो ह नु मी त वि र
 हा हा करेः ऊं ऊं करेः ज्या न करेः वि धान करेः दु दु स य
 करेः उल ता वानः स्य हि प देः हि रा को रे आ यो म रे गुरु गो
 सा हि कि स व तः सा चाः व पु वा चाः ई स्वर मा हा दे व कि वा
 वा स्वाहा ॥ थो मंत्र स्क्ता पातं जाये पायं नी वोक हि नो वा

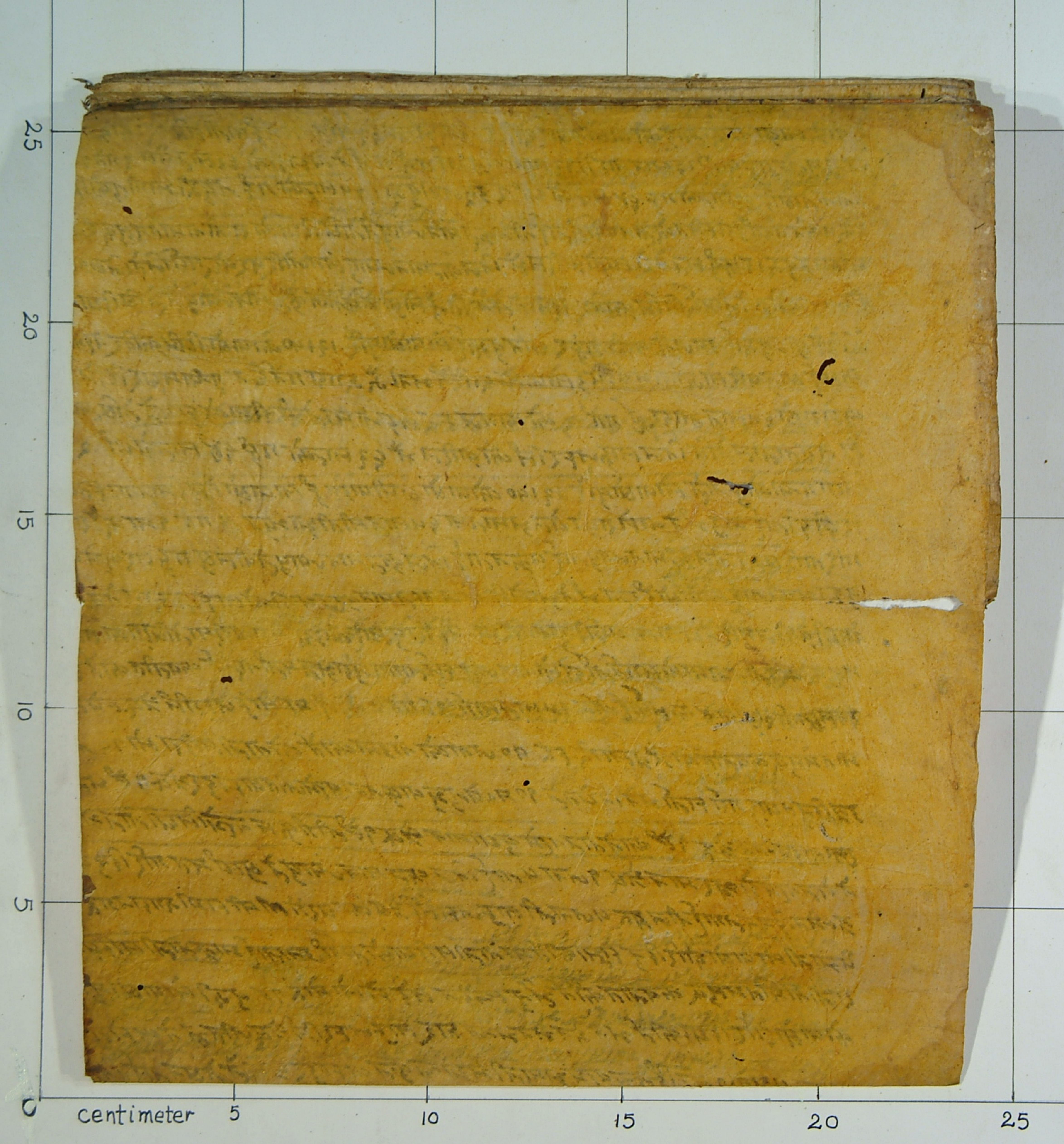
गुरु

वर्ज किं को

हुं

हुं





25

20

15

10

5

0

centimeter

5

10

15

20

25



Hella

जोगिनि विधि

ॐ श्रीं फल ॥ धातले जोगनियो सिउ करने किरिति लिखवै है जोगि के
अर्चना करीले कुवर्कि संपति मिल जाई है प्रकृत काल उठक नित्य कर्म के मन
रसे सुत मंत्र से दिउव धन करै फिर मंत्र मंत्र प्राणा घाम कर्के कटा दुःखाय करै
हीं अशुभाभ्यां नम ॥ श्री भक्तिका यो नम ॥ रूपादि एक अरु ५२ का
महात्म्य जोगि का चित्र बिंद्य प्रति दिन तात रिके समये एक सहस्र मंत्र ज
पै पतु पुजा के पदिले रूपा ध्या न्को कलिपा करै ॥ ध्यान ॥ पूर्ण चंद्र नि
मां गौरि बिचित्र म्बर धारि मूं ॥ विनो नु दुःखी वामां सर्वे काम हृदये पदी
मू विधि ॥ एक सहस्र ने पिदे मछि ताको समझे जोगिनि प्रसन्न होक

जोगि
सिउ
होय

वास आंवे जि तव उन कि पुजा कर्के घर मागें और देवि माता वदन भाषा अर्थ
वा भक्ति भावसे संतोष करै ॥ जो जननि भाव से पुजा करै त नित्य प्रति धन कि वृ
धि होगि भावसे पुजा करना करै गादः दुर्ग वल्लु दिव्य कन्या नाग कन्या का ता
नः होगा और देवि कहने के स्मान रहस्य करै ॥ जो अस्त्री भावसे पुजा करै
तौः त्रिभुवन का स्वा मि होय संसार्कि उत्प उत्तम वंत्त उत्तको भिरो ॥ और स्त्री के
स्मान उसके साथ देवि रमै करै ॥ यहिल एक अन्य स्त्री से गमन करै गात
देवि उसको सखा करै ॥ ॐ नमो भगवते विचित्र विरह तु माने प्रल
पै का हानल धर्मा प्रजोहित प्रताप बल देहाय ॥ ॐ जनि गं भलं भुता
प्रकृत व्यास मद लेखन वयं र शोभन वं चनाय भुत गर्ह वं चनाय ॥
इह मल्ल मल वं चनाय चौर गर्ह वं चनायः प्रारिच गर्ह वं चनाय

य
कम
विहनु
मान

पदम/भार
मन कप

25

20

15

10

5

कामदेव है इस १ महीने तिनों का में सो सो जयें तो फिर जिस स्त्री कि ईया
होई वह देव देहि स वस हो जायें ॥

१ प्रतिवसो
मोहन

ऊँ हों नाथं तुच्छं मन्त्रं ध्याते हों पञ्च नखे उच्च पदं पानि हों सा मोहि निलः
ति सौ सा धौ मिनी का मि पाति वन्द्यो लुकेन सा जयेन जाम्पलं रासा स्या
जहा स्त्री का पाति मन्त्र कला हो वहा कि मति का इल मन्त्र को जमाति होई वायस
थ बे के पां चों नखों से उछा लाये और पाँहों से हाथों के पां चों नखों से ऊँ हों के
व कि मिदि उछा ला वे दोनो के वेतः वनः क्रः बिच से दोरा छोदे वे इस वे
रा को धर्मः छदे जब तक पाति न लायें लाघने के सिद्धे वहि गाठ दे तो पाति स
स हो जायगा और इन के आये गा तब पुनः मन्त्र को प्रस होगा

१ अन्त्यत्र नपुल्क रहै गा ॥ २ धोत्री न सिद्ध को मन्त्र ॥ ओं नमो न
रसिंहाय हिरनय कसिपु वभे स्वत विज्ञानीय श्रीसुत न व्यापकाये
सुत प्रेत पिशाच शंकि कुलो मुत नायः सम्भो क वाय स्मल देवा
नरहर हर विलर पञ्च पञ्च नहन क म्पयः क म्पयः सध सध
ही ही ही फत फत हुः हुः ऐं ह्रीं ह्रीं अ ज्ञा वयं ति स्वाहा ॥ इस मन्त्र से
सर सो पठ पठ कर रोजि कर प्रसार करै तब संवर्न गर्ह दूर जायें गा ॥

३ ओं सर्व भूत भ्यो नमः शि गृहान गृहान स्वाहा ॥ इस मन्त्र से मन्त्रिका मात १ गर्ह घालि
पकाक नये विष देमें छक पुछे छुप अद्वैत गंध दिवक और दिना धर्क स
क्रमे स्मरें और तसे छदेवें तो तर्ही दिक् सब दोष दोष दूर जायें ॥

१ गर्ह घालि
सत

१ ओं इत्ती इत्ती इत्ती इत्ती इत्ती कृत ॥ भगवान कहत हैं कि यह मंत्र सादर
न मंत्रा रूप है इस मंत्र का ५०० जाप करने से त्रिलोक में उसकी स्मृति ब्यो
नहि रहता और नित्य धन धान्य पुत्र मित्र व धन्य रहत है ॥

२ ओं नमः स्मृता न वासिर्नि ने भुतादि यत्ना घन कुरु कुरु स्वाहा ॥ १ भुतनि
३ रविवार के दिन निराल के पते और फुलते जायें उल्लेख कुरु कुरु ता और वि
ली का विद्या गत देवें कुंत के रोम गोक और धन भी गत देवें तथा स्ये र कि
र मिथि और कर्वा तेलानि गत देवें धुप देकर इस मंत्र पौतों भुत वाधा रादे
स भुत व्याता देव मानन धे चर संकिनि प्रेत निः पसव धुप देकर हि भाग
जाते हैं १०८ मंत्र जपने से इसकी सिध हो जाति है

४ ओं नमो अमुकस्य वर पराक्रमं कुरु कुरु स्वाहा ॥ रवि वार के दिन ३ वार

इस मंत्र कर्कषी लोगो व कि जद को दाया में मखा कर विमले और उ
से त्याग दात कर पंकिने ऊपर से दुध पियें तो स्त्री दासि हो

५ ओं परमं ब्रह्म परमात्मने अमुकि गर्भे दिव्यं जिवि सुतं कुरु कुरु
स्वाहा ॥ मंगलिर अथवा ज्यठ कि पुर्नमासि को घर ति व कुरु तो न
बदन वार आदि मंगल कार्यों को कर्कः देविका पुजनः इस मंत्र १००८

जप करे ब्राह्म हो जन कयें ददि ना देवें सैं सा करों से जो पुत्र हो जाय नि
ता रहि गा ॥ ओं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं भोग वरदा भैर्व मातृ गि त्रैलोक्यं ५ ल वने

वस मान्य स्वाहा ॥ मनसि गोरचं प्र इस मंत्र का सहस्र जप कर्क
निरुक्त न गाते स्मय मंत्र लात मंत्र जपे त् देव त्वहि वर हापे

४ पुत्र
हो गा

५ ल वने

[illegible]

विष्णु कन्द और वद कि जदः दोनो को जहाके साथ लिखते और इस मंत्र के एक अथवा जप कर
प्रजापति विलकतागा वै जो देखें लोह वास हो जायः पुष्पे न देव मे साथ कि जद हइ ईति कि ज
दः और इन्को सात बार मंत्र पढ़े साधने वास हो वै जो देखें लोह हाथ जो देने लगी मंत्र देला
ह जपें तै सिद्ध हो जात है ॥ औ नमो भगवति विष्णु के मे वसमान प्रस्थाता ॥ इ दुसरा
मंत्र
मंत्र को कहते हैं १ लक्ष्मी करै तौ सिद्ध हो जाति है फिर नेचे लिखे अथ प्रयोग जो प्र लो मंत्र
व प्रले से सिद्ध हो जाय है ॥ धुतरे के पत्ते मखन जल क क मः तार इन्को घिस क छाने या पिने
१० कि वस्तु मे देवै द अवाप्त वस हो जाय ॥ १० औ नमो भगवति ह्रीं नि चामुं दानिः १० वस्तु को
वदंतः प्रप्त वह प्रस्थाता ॥ इस मंत्र से यद लक्ष हो लक्ष हो जाय करै धुप दिप
ने वेठ च धावै और लिखो वस कर ना चाहिते इन्को वालों को हाक मरुत मे मिलाव ॥

गोहि वन लेवें और सहस्रवार मंत्र पढ़ कर देवन को इस रीति से मंत्र लिख करने प्राजित को वन
 किया चाहें वह इस जगह आ जायेगा जाहू वैद्यक जप करेगे ॥

१ ओं ह्रीं श्रीं कीं लिखे चारि ज्वाता मुखि ज्वाते निस्स प्रोक्ति निः वसि कर्त्तुं पद्य नः मोहि १ ज्वाता मुखि
 सर्व रि ~~क~~ निवारिनि ली गन ही हारिनि लुचि दायणि ३ ओं आ कौं ह्रीं त्रा
 हि वाहि अथ नो भयः अथ नो भय उमु कं मे वडा ऊर ऊर स्वाहा ॥ इस मंत्र को दि
 प मासिका के रात्री को जपें चमेले के फूल वरुणिः सिद्धि आदि का भोग धर फिर दसाहा
 का हवन करें इसी तर्ह पति दिन जप कर्त्ता है फिर जो ऊर का रस चाहेंगे तत्कात ज्वा
 ता मुखि लिख करे ॥ २ ओं धन वता कर्त्ता ये नमः ॥ इस मंत्र को पठ २ दुलहा
 म एक लहे जप कर सिद्ध करेवें फिर इस मंत्र प यक पथर पर सात बार पठ करेगा सुखा जाता
 ३ ज्वा

३ ज्वाता मुखि लिख करे ॥ ३ ओं धन वता कर्त्ता ये नमः ॥ इस मंत्र को पठ २ दुलहा
 म एक लहे जप कर सिद्ध करेवें फिर इस मंत्र प यक पथर पर सात बार पठ करेगा सुखा जाता
 ३ ज्वा

४ ओं नमो भुत नाथ तमस भुवनः भुतानि साधयतु ॥ इस मंत्र ४ त्रैलोक्य
 यक लहे जप कर भुत नाथ सिद्ध हो जाते हैं फिर इसका स्पर्श करने से आकार
 पाताल पृथ्वी के चार चर प्राणि वही भुत हो जाते हैं ॥ ५ ओं कुं लः अमु प राजा य
 कं करु करु स्वाहा ॥ मंत्र को १ लहे जप कर सिद्ध करे फिर पाको एक सह स्रज
 ५ त्रैलोक्य

कहनेसर यदन गोरोचन कपुर भिलाक गोचें दुधमे दिसल पवें ओर तिरुक् लगाकरः १
 १ जाकेसन मनसुख जाये देखते बस हो जाये ॥ १ ओं सुद ईगा ^न हुं फुत स्वाहाः १ लाङ्गुलि
 स्मर पर्व ^{नित-यका} एकटे हल जयें हल नसुत्रमे चक्रमर्दके जद लाक दोध मे वीधक
 २ राजहामे जायतो शासत्रार्थ में जितै ॥ २ ओं प्राणि नि स्वा हा ओं हा मित्रै २ व्यस्य
 स्वाहा ॥ ओं गादि लाय अंगुल कि किल लाकर उसपर ये मंत्र सातवार पढ़कर वे
 ३ स्वाले धर्में हात देवें तों व्यस्य बस होय ॥ ३ ओं अल मृत्युं जय दे मे ॥ ३ भाक
 मंत्र जो पढ़पर कृष्णाल कि भी दिसे १ पतिमा बनावे १ मनुष्य के हादपर १ सहस्र ^{मवस्य}
 ओठ मंत्र पठ उस पतिमा को धिरे २ रिगदै फिर उसपर त्रिकला जोत देवें ओर ^{पतिमा}
 सब देह मे सर्वदेह देवें फिर उस पतिमा को लतात पर अनामिका के रुधिर मे उसम
 पुष्पेका नाम लिखः धैर्के कोपलोकि आगमे रख देवें ज्यों ज्यों पतिमा गमै होगी
 त्यों त्यों आक र्छ होगी

४ ओं न मो हंति तैस जाते कौं स्वाहा ॥ नगर्क भित्र प्रवेस कर्के मंत्र को १: ४ मात्रा न
 लक्ष्मी फिर इसा हावन करै है या कनेलेहं लिदेवि प्रसन्न होक १ अंजन दे जा ^{मंत्र}
 ५ यंति निम्ने पृथ्वी काः गढा हुआ धन दिखेंगा ॥ ५ ओं ही प्र मो दा ये स्वाहा ॥ ५ प्रमो
 आधि रात उठक १ सहस्र ^{मवस्य} जयें १ महिन्य तक हैं तो देवि प्रसन्न होकरः पु
 धिकाः गढा हुआ धन देखावें गा ॥ ६ ओं हां हिं ही मुनी वा धं मुहा
 वता प्रताक्रमामयः सूर्य पुत्रा धामित तेजसैः ऐकहिक इ या हि क
 न्याहिक चोतु धिकः महाज्वरः भुतज्वरः मयज्वरः क्रोधज्वरः
 बेलज्वरः प्रभुतिज्वर नाः दहः ६ दहः पचः पचः अवतः अवतः वा

नर राजाः ज्वर नाः वं-धः वं-धः हां हिं कत स्वाहाः नाति

ज्वर॥ ज्वर जगत्तन समर्थ ज्वर स्त्र स्यत्य ॥

इस मंत्र को साद देवें तो विषम ज्वर मान हो जाय है पर हारी तो कर्म मंत्र है

१ ओं ह्रीं रति प्रिय स्वाहा ॥ ऐसि देवि का चित्र बनावें जो गोर्व १ रति प्रिया
रतः ओ १ मन्त्र लेः ओ १ अतः कमलः प्रयो जे अतः कृत होवेः उल्को चमेति के फु पद नि
होसे पुजन को १ हस्त मंत्र जयेः हस्त हस्त सात दिवस्तकः तिगो लखे जय करैः अर्द्ध ॥

त्रिके स्मयेः यह देवि आकाश च चित्र स्वर्ण मुद्रा देगि ॥

२ ओं ऐं लक्ष्मी श्रीं कमल धार्मि कृत है म ॥ स्वाहा ॥ १ लोके
हस्त मंत्र कोः ऐं क लक्ष्मी जये फिर अपने धर मे बैठ कर तात करने के फु जोसे दला पादिनि
हाला स्वयं करै यला कुनेलेः लक्ष्मी देवि पुनः हो क दि १ र साधन प्रदा
न करै गि ॥ ३ ओं क्रीं प ल नि स्वाहा ॥ अर्धे चित्र चंद्र म १ मंत्र नि
पादिनि

हाथ भर चौका तगा कर फा सि नि का पुजन करै मृगा लो धन देऊ १ हस्त
मोहति दु देवें प्रक सास तक पुजन करेः फिर हाथी मे जाय वरै आधि हात पिदे
श्री देवि आक दिव्य योग भोरः धन दे गि जि मे जम करने वाता लखि हो गा ॥

४ हुं श्रीं हुं ॥ सि मंत्र को जले छल क जये तो अना वृद्धि बहुत जाय १ अना वृ
५ ओं न मः शि प्रं का मि नि अ मृ किं मे व ल मान मः कृत स्वा १ अना वृ
हा ॥ प्रात कात अपने हात को धो कर इस मंत्र सेः सात बार अभि मंत्रित करे जि म १ वलिकर
स्त्री के नाम से जल पिबे वह स्त्री बल होय ॥ ६ ओं मृ हि मृ लि महा मृ लि १ इन्द्रा वर
रश्म रश्मः स वा सां धे न्र ये भ्यो पर भ्यो स्वाहा ॥ नाम के सर चितो जि
त गारः कमल के सरः वच जता मासिः हन मिता करः चुन के के फिर हस्त मंत्र लेः अपने

अंगदो धूप देवें: जिस स्त्री के पास जाय सोई वस हो जाय॥

१ ओं हा वि त्रि स्या हा: ऊ हा मि ले स्या हा॥ ओं शा का मु दा चार अंगुल: त

१ व्यस्य
वस्य

म्या निबल लेवें और: इस मंत्र के सात बार अभितंत्रित कर के वस्त्रा के घर्भे गारे
२ हो वसि भूत हो जाय॥ ॐ ह्रीं ह्रीं पुं पुं फत स्या हा॥ धुग्धु के नेत्र

२ वस्य

का: घास चन्न गोरो चन केसर: मद्धलिका तेल इनकी सार पर मालि करै तो स्त्री वस
३ ॐ ह्रीं रक्त चा मु-दे: तुर तुर भ मु किं मे वस मानय स्या हा॥

३ अने
मंत्र

बकायन के फूलों धृत में मिला कर लवन करै इस तर्ह सात रात तक करने से स्त्री
४ ॐ पु जि ता घ स्या हा॥ किर्के ता के दहीन: नेत्र में: काली और हात

४ अने
वसि हो

मिला कर हाथि नेत्र में आजै तो अत्य-तरुण शर्जिता स्त्री भि वसि भूत हो जाति है

१ उद अवा स्त्री वस हो उधवा राजा वस्य हो

१ तम्वर पैता जंत्र

सिजत्र का सि के पा के राख ले: माजक चमे त्रि दि कलम से

गोत चं: और चन्द ले: जिसो वस करी चाहै उंस्वा

नाम लिखै: उंके चारो और १ गोता क्र सि च दे: ३

उंके उप: अमुदल: कमल बना कर: वं कार लिख दे:

और फिर एक गोत चो सि च दे वें आर लिख का

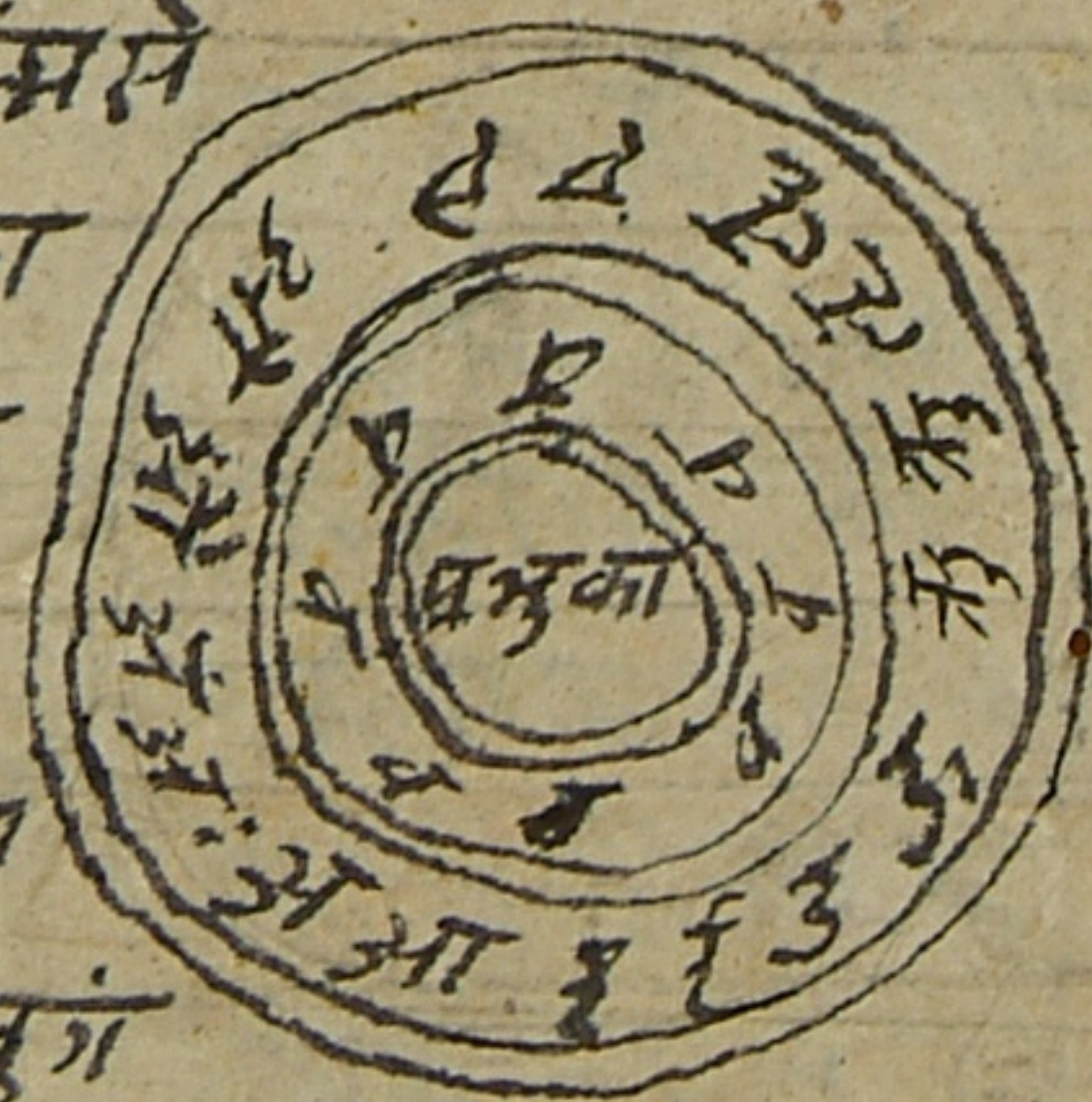
चमे लिखे: स्वैत कमल के पुष्पो से पुजन करै सुगं

धित दर्व साहने सभै और वस्त्र उधो दे इस जंत्र के नाम: महामोहन

हिका विधि त पूर्व क पुजान कर के लौ वर्न उ-धावा चादिके ताबीज में मडा

कालि र भुजा गले बाधि चाहै छि हो चाहै मुद घले उंके वाप सपुर्ण सति

कि तर्ह वस हो जात है —



राजा को को प्रसांत करने जत्र

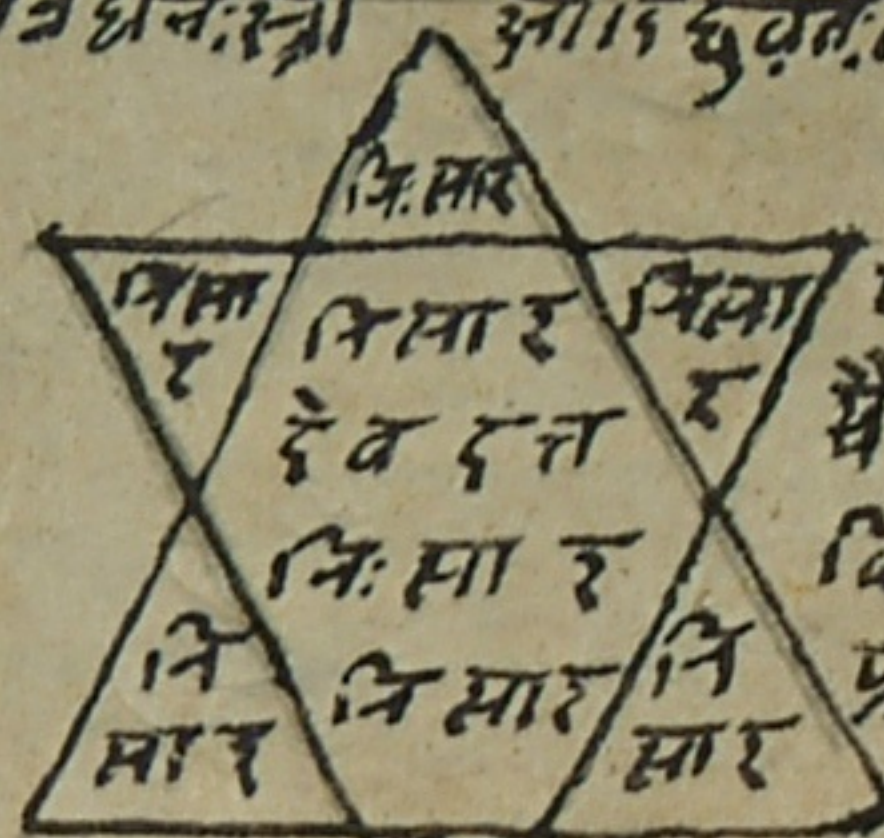
॥२॥

सी सी सी सी
सी सी सी सी
सी सी सी सी

इस जत्र को जापत्र प्रगत वं
कसी चन्द मे अनामिका
का रुठित मिला क लिखें ओ
र अनेक पदों के पुष्टे मिस्र
न और मास्के विधि वत करै यथा साक्षि कै चा
और बाहुन भोजन का वै धो गि न कु मल्ला

कु के राज के हवा में जाय और पुष्टि मे
इस जत्र राज को जाय तो तत्काल राजा
को को धो लौत हो जायंग और इसके
राजा लुं रंत व ल हो जायंग

॥३॥ पुत्र मित्र धन स्त्री आदि दुष्टे तत्त्व मोहन



इस जत्र को भोजन

पत्र प मोत चंति

धै और लोहे के तां

विज्जे धु क्रमि

प्र रा धै धि रै

संसा र्से वैरा

ग उप जै गा पुत्र मित्र धन स्त्री मोहन वं
धन दुद जायंग और धौ गि हो क ई द्या पुर्व
क विच नै ल गै गा

॥४॥ पुत्र आश्रित मेका जत्र

मे	ष	र	क	इ	य	ह	धा
क	जि	ज	त	द	नि	च	न
दु	रा	वि	य	मं	त्र	ते	प
हे	कि	पा	मो	हि	न	वा	त्र
त्रं	जा	सा	दि	मो	वा	कि	दे
प	ते	नं	मं	य	वि	रा	द
न	च	नि	द	तं	ज	नि	क
पा	त	य	इ	तं	र	धै	मे

इस जत्र को आदि के पत्रे प्र: क ३१ यदि पत्र मे काज
लाकि स्पष्टि व नाक रा के ल्म पत्र पत्र हो क लिखि
पत्र चौस्थ को ल्का जत्र है र्मो रि वति स
अदे को मित्र को अउ लोय और पार्ते लोम तिहि
ले: लिख लेवै: मे छेर कं इ य ल्पा क जि जेन द
निवन द्वा वि प मंत्र ते छ कि वा मो दित मा
त्र म

॥५॥ प्रकाशज्वरनामजत्र



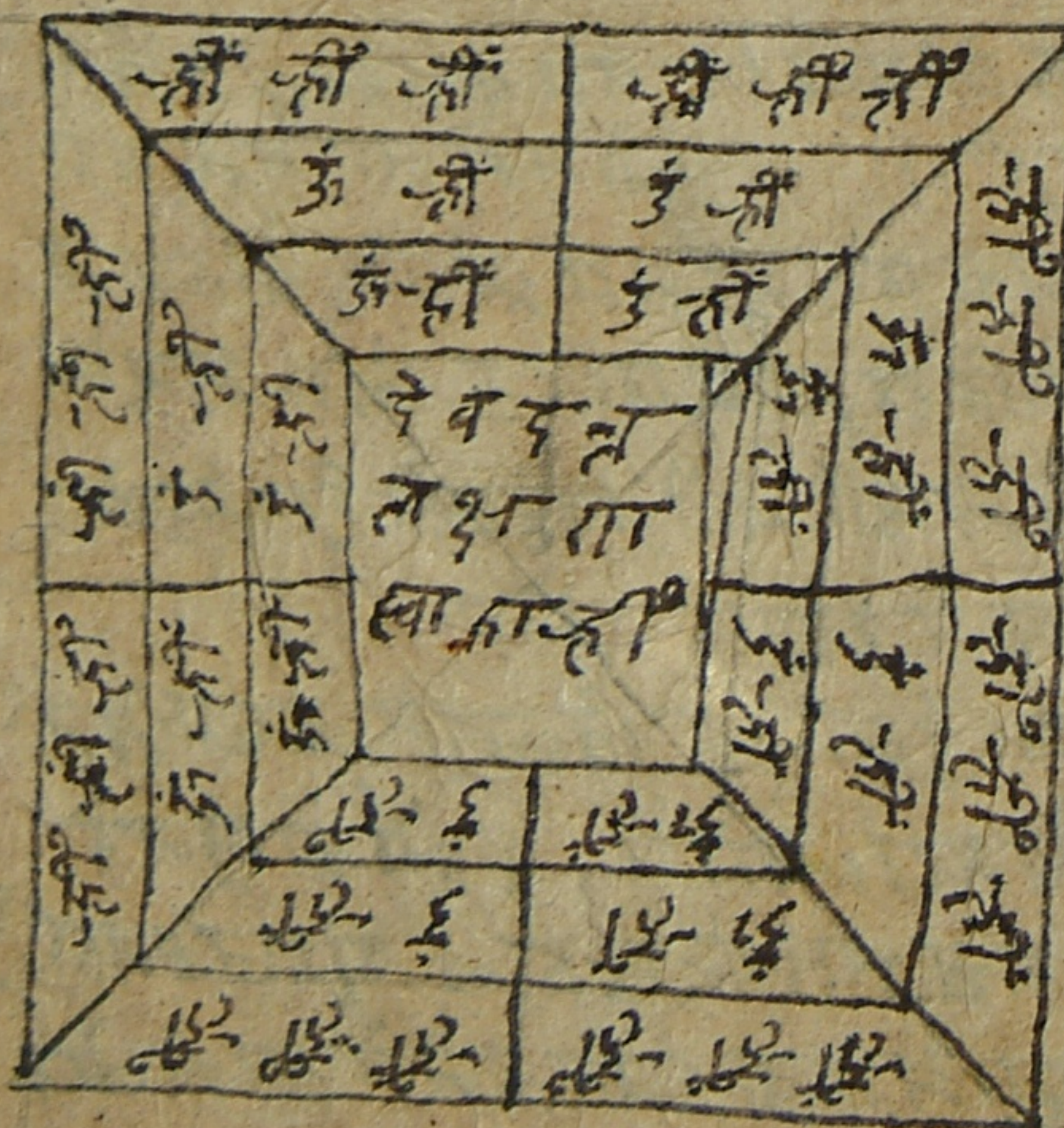
हृदि के लिये कि स्थाहि वना
मान्य वृत्त के कते से जत्र तिथौ ति
क पुजा के है फिर इस पात्रो राशि
के लिख ब्रह्मदे प्रकाशज्वरनाम है

॥६॥ आकर्ष मोहनजत्र



हिस जंत्र दे
मोहचं भोजा
स त्रय लिख क
धुप दिप से पुजा
न कले छिमे भ
देवे नित्य पु
जान कले - त्रिपारायि प्रार्थना लि
मंत्र ले करै: आ कर्ष य माहादे वि देव
इत म पाठ प्रिये: ऐत्रिपुरे देव देवे सि
तुभ्यं दास्यामि जाचितम्

॥७॥ लोभपाको लैन भाग मे जत्र



विचो लिखे जत्र को संछा हनि
सुर्व सुखी गुल ते के सं हो
न गा दे के कु प्र ये छे सोर द के
दि वा द दे वे तो ले मा भा ग भा
घं शा

॥८॥ ज्वरनामक जत्र



॥६॥ इस जन्म में लान में वैद्यक बिगड़े प्र धनु के ही से हो स और कृष्ण पक्ष के इस मी
 तथा धनु इस को पुजान कक्य वहि आ ध देवें और पुजन करै तत्काल जोर
 जाता रहे ता है ॥ यह जन्म वालो के जी पे अवश्य कर्नी इ चित है

ॐ ॥ सर्व वि स ता स जै न

॥१०॥ वात र को चित दु र क ने जन्म

III	=	=	=
III	=	III	=
=	=	*	=
III	=	I	=

काग त मे लिख क धो क त वै तो
 सर्व का वै स तत्काल उत्र जाये
 च ध ने न हि धा वै

२१८	२१८	२१८	२१८
२१८	२१८	२१८	२१८
२१८	२१८	२१८	२१८
२१८	२१८	२१८	२१८

इस जन्म को
 रक्त चन्द से
 भोजन मंत्र प्र
 लिखते क वा
 त के गला मे
 बांध क। चे

तु जा ई मित जाता है

॥११॥ वा नि ज्मा र्थ व स्य क



इस जन्म को अपने हाथ मे गो मू च
 भोजन मंत्र मे लिखें और लु घं दित ह

ॐ व्य मो से पुजान करै य का त मे र
 ब दे वै और इस मंत्र ज पे तो त
 त को र व स्य को य

इस जन्म को पास ले वि

ॐ इ म आ क र्ष य स्वाहा ॥ जन्म चाल

॥१२॥ जगदबसिक्रजंत्र

उं	वं	जं	ह्रीं	उं
दै	उं	ह्रीं	उं	उं
वं	उं	जं	गं	तुं

ह्रिजंत्रको कपूर के लकीर चन्द गो
लोचन चमेले कि कलमे भोजाय
त्रिगिष हस्की तिन दिन तक विधि वत
पुजा करके तांविजे मधक बाह मे
बाहु लेवै जिसको पाल जाय सो र व
स्वे हो जा गा

॥१४॥ पतिताजंत्र

द	मु	सि	ज	जं	त्र	०	०	०
अ	व	जा	पे	नि	खे	०	०	०

ह्रिजंत्र का गज मे लिख कर लधा
वै तो प्रेत व करै और बात करै जो
पक्षी उल्लास जाय वै घं गा

॥१६॥

गज
मध
नाम



॥१३॥

वस्य कराल जंत्र



जंत्र को
ओर मुख
से भोज
प्रतिष्ठा
क विधि वत
पुजा न करै
और तां वि
ज मे मधा

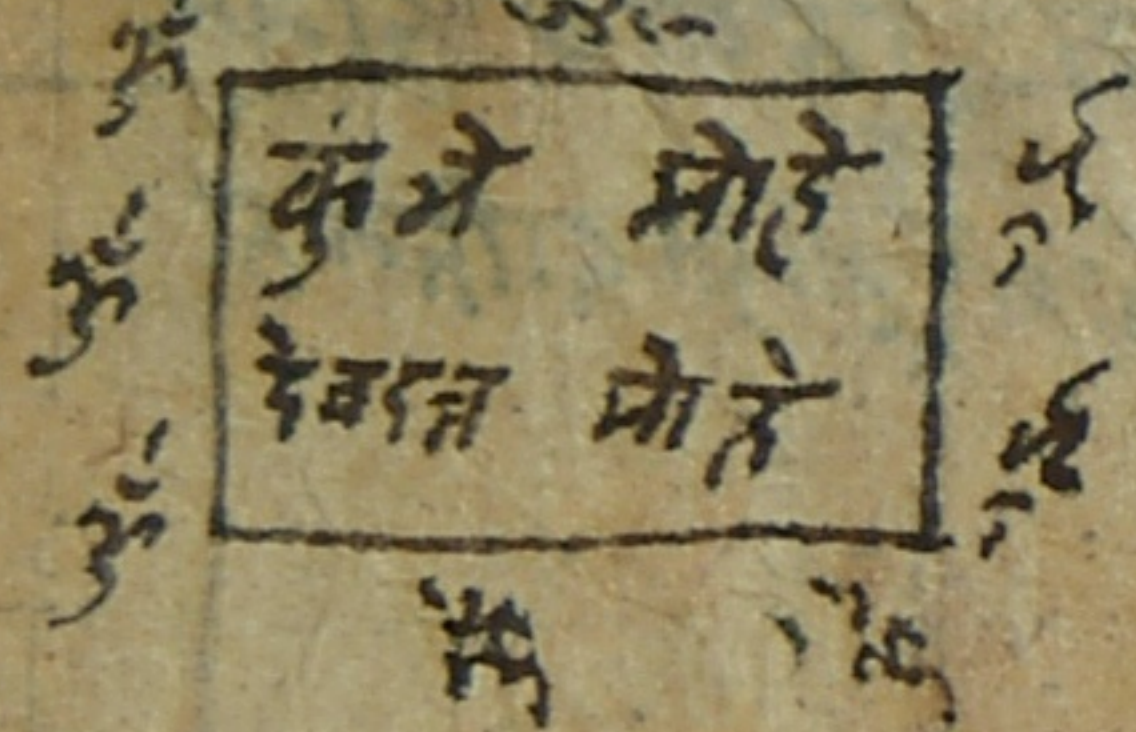
जो देखे सोई करंत वस्ये होय

॥१५॥ जुवा जित्य जंत्र

१	२५	२३	१३	ह्रिजंत्र मध
३१॥	१७॥	३५॥	३६॥	मुष्टं कले भो
१॥	६॥	२४॥	१॥	जावत्र प्रति
२६॥	८॥	५॥	४॥	धूप दिनि और बाह मे

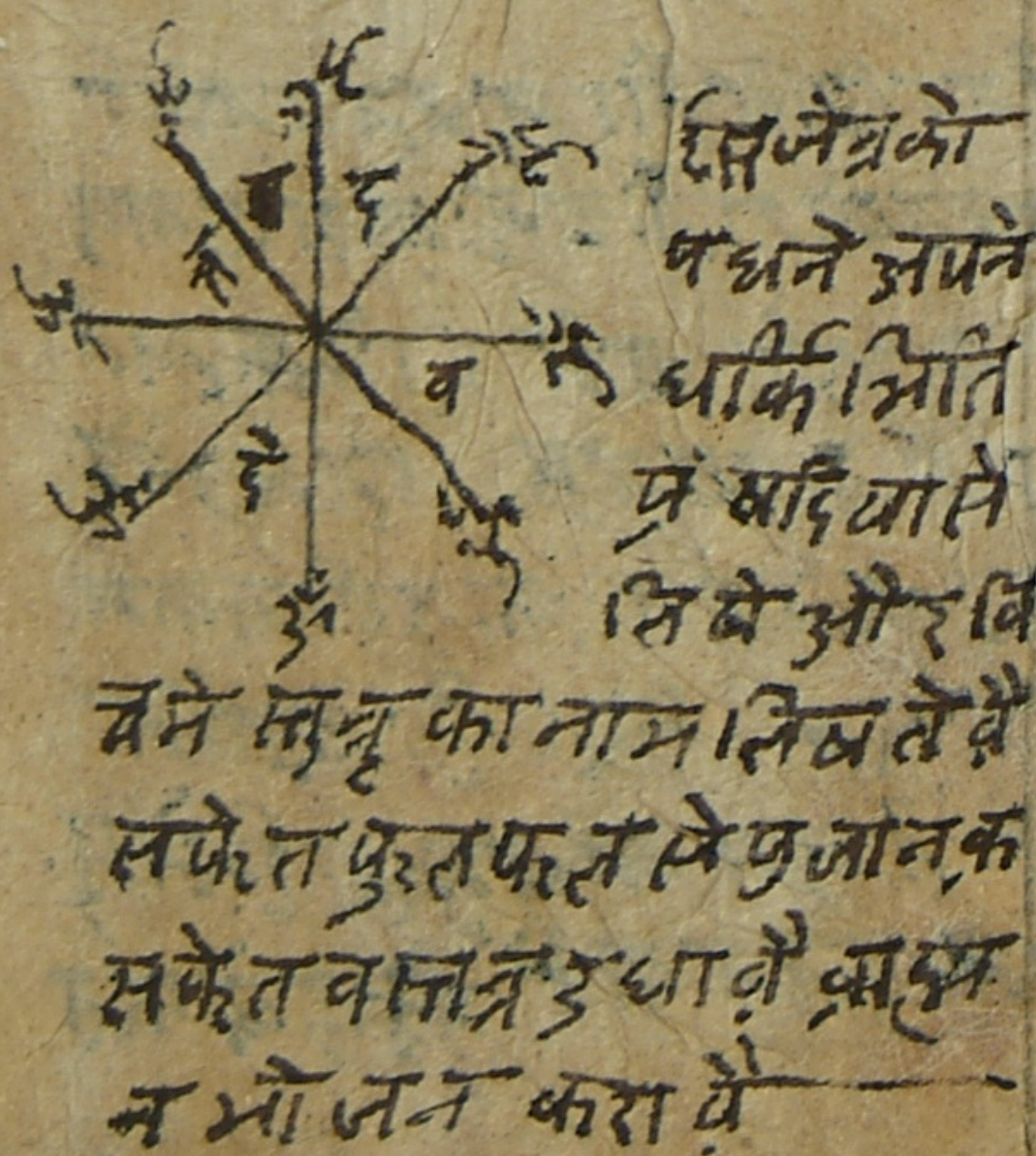
बाह मे बाध करवाये तै तो का मे
हा रैनहि जित्य गा

हलजाना भय नास जंत्र ॥ गोल चं कुं कुं भोजा पत्र प्रतिष्ठ और सरा व नें पुद मे र
 म क भक्तो पुर्व क पु जान करै दुसरे दिन निका क सिखा मे बांध लेवै और लो
 न हो क फल की चितना करै उस्को हलजत्र राजा कि कपा से कृद भय नाहि होगा
 ॥१७॥ आशा लभन जंत्र



हलजत्र सिता लें पुद प्र गोल चं द रि ता त हला दि
 मन सित कुं कुं म ले लिख और पि लो ले पुजन
 क के धरा प ने व च व है और हलजत्र को लम
 भु मि मे र ख न मिदि से राव दे या रा व ध भोजा ता

॥१८॥ सुप्रसन्न भन का



हलजत्र को
 व धने अपने
 धार्कि भित
 प्रे म दि वा से
 ति वे और वि
 व मे लु नू का नाम लिख लेवै
 ल के त पु र त फल ले पु जान क
 स के त व ल त्र उ धा वैं प्र म
 न भोजन करा वै

॥१९॥ अग्नि लभन जंत्र



भोजा पत्र पर पि
 त द व से लिख कु
 पुजा क वा ल रा
 भोजन करा वै और
 हलजत्र को प
 चि मे गा ध दे वै आर पु स प वा
 नि कि धार हो द ला दें तौ अग्नि
 सि ध ला त हो जा यें गा

१०॥ सप्तनामस्तोत्र

उं	ए	श्री	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ते	रं	मं	मं	कं	मं
मं	अं	जं	चं	ज्रीं	कुं
अं	तै	सं	नं	दं	अं
पं	वं	लं	टं	रं	अं
उप	रं	वि	रं	लं	लं

म दुषहोयभौरस्तुवृक्षानासलो जायं गा

॥३१॥ सुवृणासजं

ॐ श्री देवदत्त ॐ ईश्वर्यो कौंय
किं यं स भोजनं पत्रप्र
विषमौ रहरिता सति
अफिर सिनं नको स्या

सानव्यो गारु दे भक्त प्रगत लुह
कि मु तु हो गा निलय —

॥२२॥ साशु महावस्यजंत्र

ॐ	ॐ	१	१८
ॐ	ॐ		१८
की	स्व		

ॐ	ॐ	१	१८
ॐ	ॐ	१	१८
ॐ	ॐ	१	१८
ॐ	ॐ	१	१८

हिसजंत्र गंङ्ग कि
 रोति प्रतिषक्का
 लि कुति या कुल
 वावें तो सा इवसे
 होय भौ र कुता कु
 घवावें तो लुलु स वल्ल होये

सुखायैतो सुख स वत्पहोये

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

इस जंत्र गले में वा
धौलौ प्रोत दुरजा
यागाः कं कं गौत
वं केसरिजुत्रति
अ दुरजा यागा हो

112311

संक्रियकार्ये

This detail shows a section of a manuscript page. It features a grid of lines, with a vertical line intersecting several horizontal lines. To the left of the grid, there is handwritten text in a script, possibly Indic, arranged in a column. The paper is aged and yellowed.

१
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

2	3	4	5
6	7	8	9
10	11	12	13
14	15	16	17

स्विन्नगिलोयके
रस्सेभोजापत्रहि
मालिनीनेधक
सोवैरात्कभुतहि
भुतदेवैरुप

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

1542

॥ २५ ॥ भूपदेवनाम्भ

॥ २५ ॥ तिजारी सुरजंत्र ॥ २७ ॥ पानिबंध ॥ २८ ॥ वालप्रोदवाजी ॥ ३८ ॥ आधासिद्धि सुरवा

८	२	७
४	६	८
५	१०	३

सिजंत्रभक्त
सुखप्रति
भक्तभुजामे
वाधेनोतिज
रिदुरतोय

११	१८	२	८
७	३	३४	३४५
३४	३४	८	१
४	६	३४	३४७

वागजमे लिख
धुपदिपदिमावै
है पानिबन्धनोताहै

११	१८	२	७
६	३	१५	१५
१७	१२	८	१
४	५	११	८६

सिजंत्रभैस्केसिंग
केउप्रलिखकुअ
वामेगाधेतैवाल
फुतैगाअवाय

३८	४६	२	७
६	३	४३	४२
४७	४०	८	१
४	५	४५	४८

सिजंत्ररविवाकैदिनरी
भक्तमाध्यप्रवाधेतैआ
धासिद्धि सुरजायगा

॥ ३० ॥ राजासेसनमानहो

४८	५०	२	७
६	३०	४७	४६
४८	४४	८	१
४	५	४५	४८

सिजंत्रकपुरकानुरि
लिखकुपासराभेतो
राजाआइदेवक
मोजंत्रन्यास
औ३महीभीहोना
मुद्रादेविस्वाहा
येस ३० जप

॥ ३१ ॥ द्वायाभक्तनेजत्र

२४	११	२०	१	२८	२८	३०
२१	२७	१८	१	७	४७	३८
३७	३५	२६	१७	८	६	४६
४५	३६	२४	२५	५६	१४	५
४	५५	४२	३२	२४	१५	१३
१२	३	४२	४१	३२	२३	२१
२०	१२	२	४१	४०	३१	२२

सिजंत्रकोपहितावनाफुजता
वैतोद्वायाभक्तहोजायगा

॥ ३२ ॥ विर्तिनासजत्र
दुसरा

४१	११	२२
२०	३०	४०
३८	४२	११

सिजंत्रकेकतारिकेप
त्रप्रलिखःसुखायेफि
राजिसजगहसोवैतव
उसकेउप्रगतदेवैःपि
तिदुदनासहोये

॥३३॥ वराहपुराण

८	२०	१३	१
१४	२	१२	११
२	१५	६	६
११	५	४	१५

सिद्धि जत्र चार भोजा
पत्र पत्रिष कत
कत प्रजद जद
चार त्रिष क चारो
को नो गांध देवै तौ
सव वना ये दुर्गो
जाय

॥३४॥ नरनारिको विधे मन्त्र अस्मि पुरुष पर्व वोर

उं अजित्य स्वाहा							
दे	व	द	त	दे	व	द	त
हु	भ	जा	भ	व	हु	भ	जा
उं अराजिते स्वाहा							

सिद्धि जत्र को गोत्र चं के
स्री कुं कुं भोजा पत्र प्र
नो नो कि रा रा कि प्र
जाय और और धार्म
सति बद्ध न कि कि
न रे मि दिते आवे
उस मि दि से गन पति
कि मुर्ति वना उस

जत्र को उस प्र पाल देवै और फिर उस गन पति कि मुर्ति को ओ
के दुध से सनान करावे अने कत हंस पुजन करने संतु
षी करै इस क्रमे सराव लपुद मे रष क सपुद के उप अघोर
रो बार ति बद्धे और दि वि मे गांध देवै तौ अस्मी पुरुष मे प्रम
वैर होवै

॥३५॥ सतुरुमार्ग

मल	मल
साध्या नाम	
मल	मल

सिद्धि जत्र को चतुर्दश
कि रा तारि मेः स्मृता न
मे जा क मनु वे के क
पाल प्र ति मे धतु के रस्मे
मर्ध के को यतो को धिस क
स्या दिवना वै और नं गा हो क
ति दे फिर सरावन संपुद मे
संजत्र रष क वलि मासा दि उपहार औ
र अर्चने ह धिर से पुजन करै उस जगह गा
ध क पति दिन रात मे स्मय उस प्र अग्नि
जता वै पैसा करने से तिसरे दिन ज्वर हो
के व धता चला जाता है

॥३६॥ उचातन जत्र

हुं गं ग न घ ति प्र
तित
हुं गं दे व द तः
हुं गं धं स्वां ग हा

सिद्धि जत्र चतुर्दश
रात्री के स्मय तात वै
सत्र लात पुर तो कि मा
भा रा धार्म क के ता
त चंद ल गा वें अना
मिका उगाति के त धि से ति से और तात
रंग के हि प्र धा दि क से पुजा न क के वा
ल को का वै द दि ना वै वै फिर सिद्धि जत्र
को लुत दे क के उ की र भा मे मिला क
स्म लाने जा क को औ औ को बिला
दे वै तौ उचातन हो वै

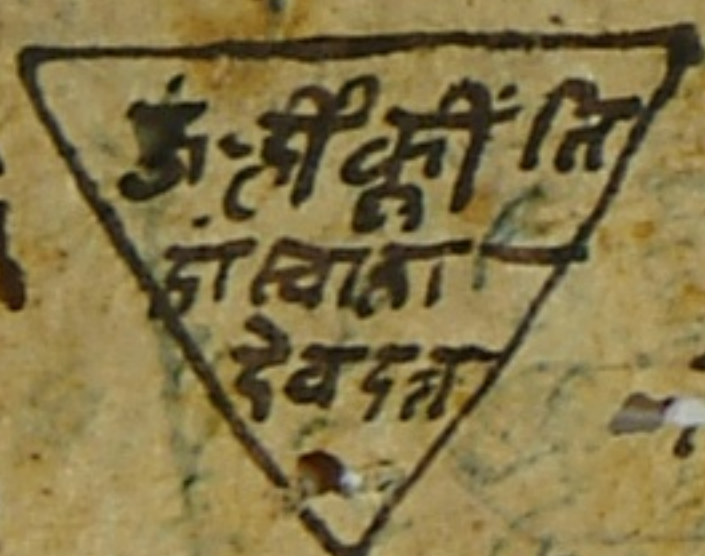
॥३२॥



दुर्दसमाना

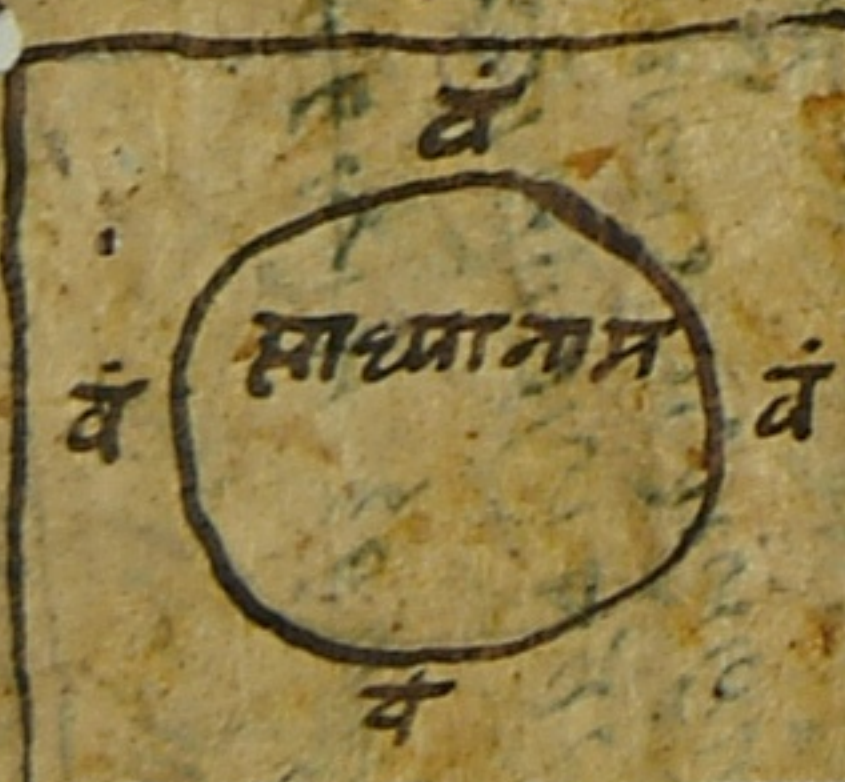
इस जंत्र को मनुष्य को कष्ट प्रसन्नान कि कौ डिये कि पंचमेती
अफिर इस मन्त्र वक्र के रुधि र और विषमे लिखे सराव स
प्रमे र वक्र राख प्र देवै और अग्नि मे उपर व देवै तै
चाहे जिस देव को कौन गाय स उस को: कात ज्वर
व धै गा

॥३३॥ मानिस आ कव जंत्र



इस जंत्र दाहिने हाथ कि अनामिका उंगल के रुधि र्से: वाय हाथ
कि रुध्य लिपि ली घटे और फूल पान धूप दिवसे पूजा न कै व
ह स्त्री आजाय गा अवस्था

॥३४॥ अग्नि नृवार्ता



हे भवानि यह जंत्र वरु है की जाहा यह स्थित होता है
अग्नि का भय नाहि: रहता है: जिसके साथ मे: यह
जंत्र होता है उस को सोपन मे: अग्नि को भय न
दिहोता है ॥ यस्य सम्य चोदे भोज पत्रय चंद
गोला चै कपुर हन से जंत्र लिख: फिर इस को त्रिलो
हके तां विज्मे मधवा क भुजा वा गते मे बाधो अथवा घर्मे विचमे तृधमे
हाल देवै और नित्य प्रति ह्मका पूजा न करो धाम्न नका भोजन करा देवै
ह्मको अग्नि का भय का भिन्न रहता है यह जंत्र देवि जंत्र है

॥३५॥ विद्युतना
मक जंत्र

व	म	स	मो
म	म	को	र
उ	र	हं	ति

इस जंत्र को हाल का गनिके रस्से का गज प्र लिख गते
मे बाधो कुध भ य न रहोय

॥४१॥



अन्य उद्योग

सिद्धि का

हो कहे के

हृदि र

से भोज

पत्र पर

लिखें और

रुबिटी व

त पुजान

कुते के गतमे वा धौ ल्यो ल्यो वह
मनु के भि भा गै गा

॥४२॥ व्याघ्र जिसे वचने



को दिवने को

हि सिद्धि व्याघ्र

नहि दे भेति

या आदि मासा

माति पल भाट

तव हि स मंत्र को वा यहा धाकि ह

ध्याति प्र भुक्ते लिख लेवें और अ

नामिका उंगुलि मेले ओहाला रुदि

र निष्कारक उसको चारों ओर लगा

देवें वह रुदुख जंतु तत्कार भाग जायगा

॥४३॥ सुषुप्त मंत्र

सुप्ता मासा विमुक्ता सुमुक्ता सुर्ध्व नर इमय मुक्ता सर्व

भया द भ र हि मा चिर मा चिर ॥ ३२६ ॥ यह मंत्र को जंत्र ले लिख

सि मंत्र को जतका सात बार मंत्रि स्त्री को जान करावें

वाल्स सुख सं होई अथवा हि स मंत्र जंत्र स्त्री देखतौ तत्का

त प्रसुति लाय

१६	६	८
२	२०	१४
१३	१४	४

॥४४॥ दुर्गा मासा

४१	४१	२	७
६	३	४६	४५
४६	४३	८	१
४	५	४४	४७

सिद्धि का अधिक मंत्र ले लिखक कागज पर मसान मे

गा धौ और सुरु मूर्ते मय स देह नहि है



॥४५॥ पुताशिवसिक्कन

ओं नमो विष्णुकाशिनं अमुकिमेव सप्तमानयजं पत स्वाहा: २४६:
अर्थ तो वो कहिये कः यसि चो कोन मूर्ति बनावावे जिन्मे एक रूप
वति पुताशिका चित्र बना हो इस पुताशिका: एक हात डंछा और एक
निचो हो: इस पुताशिका पुजान रत्न च नदसे नित्य धर्ति पुजा मे: प
धना साधन मंत्र ॥ ॥ ओं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं फलन म ॥ चमे
तिकि फल च धावे और मोन लाय क थक स्र स्र मंत्र नित्य रात
के समय जये ऐसे हं क्लीं स दिन करने से मंत्र सिध हो जायगा कि
र जिको बल करना चाहै डंसा कि और इन मे से फल ले क क के: व
रत त्याग विदे २ चीति आवे: अब पुताली मना
पुतालि मंत्र को जंत्र पुताशिका को कागते मे रोचि के मे तासिया को द

॥४६॥ पदमंत्र कि विधा

यामुन चार पदा को होता है ॥ स्वाकि ॥ वाकि ॥ आति ॥ और ॥ आति सि

स्वाकि				वाकि				आति				आति सि				स्वजंत्र का मंत्र			
८	१	६	६	१	२	३	१	६	४	८	२	८	१	६	४	८	२	८	१
३	५	१	१	५	८	८	५	१	६	५	४	८	१	६	५	४	८	१	६
४	८	२	८	६	४	४	६	८	८	१	६	८	१	६	४	८	१	६	४
६	४	८	२	८	६	४	४	६	८	८	१	६	८	१	६	४	८	१	६

गह बल मिलै: वि दे स ग य हो यो सो अय मिलै: सो गि नि को हो ये चोर मि
हो: वंधु आ दु तै: ममान भुमि मे ग धे
सो क के पते ला १५ दिन तक १५। १५ जंत्र लिखै: पते के नीचे: लु काना
मही खदे और भागनी मे: जला देतो: वैरी को नाश होये: जो कांजकी:

सिद्धी के लीवें लीमैं तो: उन्नदीसामें बैठे थके: अनाकी कर्म मने लीमैं वैरी के उपा
 लीमैं तो: उदी न दीसा मे: मुझ के: लोसकी: कर्म लीमैं और लीम लीम १
 ली १ बार सीता वैं तो लनह मरे ॥ औ स्कत वैरी से नाम को: करे रिस मंत्र को
 प्रसीसु म काज्य के लीवें लीमैं तो स्कते पही ले फते वै: रिस जंत्र को मुम
 काज्य लीमैं: अमुन पदम और उर म दीन ले लीमैं ना पाई म करे और
 जो अमुन काज्य के लीमैं करे तो कपट मे: की सी नी कहे वा ले प्रास म क
 है ॥ रिस जंत्र को प्रस चज्य ले लीमैं के लहा मंठा चा वरदा भोजन करे तथा ज
 त्र को लीमैं लीमैं: नदी मे वरु वै जो जंत्र नीक ल करे बाहर आय है उर को
 अय ने पान रम वै तो लंपुन काज्य की लीमैं होये ॥

काज्य के लिकन की गीत

गान्धिका प्रसंता को २००० लीमैं: रोगी के अच्छे करने को ६००० वली मन को
 ४००० देवता प्रसंता करने को ५००० राज गार लगा ने को ४००० वीदे ली के घा
 बुलान काज्य रूद्रा काज्य करने को १५००० मंत्र लीमैं को २००० प्रोत दुर करने को
 २००० गार् वलु प्राप्ति करने को ५००० ललु वल मने को २००० वान्दि मो
 दे को ६००० वीस ना को २५००० सत्यता प्रसंता को १००० मनु मे
 से शलु दुर करने को २००० औसदा की लीमैं को १००० तीजा हिंदु र
 क री को ६००० दुम दुर करने को: लुम उपजाने को २००० राज लीम
 को लीम मे २००० राजा को प्रसंता को ४००० रू-द होनी वाल के करने
 को १ लाख जंत्र लीमैं रिस जंत्र को गुरु के चन्ने गोली वाट धा धा
 कमदि को लीमैं नदी ने दाने लंपुन काज्य की लीमैं होये
 फीर पावती लीमैं ली वजीने पुद्गा नी लं मुजीने कदा

२२
॥
कर मच्छि को के लीये नदी ने दलौ संपुर्न कार्य की सीधी होये —
फिर पारवती जीने लीवजी जंग पुद्ग अब श्री लक्ष्मी जीने कहा —

